हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य

शशि रानी
डॉ. भीमराव अंबेडकर कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
ssranidu@gmail.com

सार

भाषा संवेदना और अनुभव का स्वरूप है। कोई भाषा केवल भाषा ही नहीं होती वह समाज, संस्कृति, इतिहास, राष्ट्र की अस्मिता और उसके भावी लक्ष्यों की अभिव्यक्ति का माध्यम होती है। सांस्कृतिक और पारंपरिक महत्व को समेटे हुए हिंदी अब विश्व में लगातार अपना विस्तार कर रही है यह न देश के 125 करोड़ लोगों की सांस्कृतिक भाषा है बल्कि बोलने और समझने की संख्या की दृष्टि से यह दुनिया की दूसरी सबसे लोकप्रिय भाषा है। यह भारत के बाहर ना केवल एशिया बल्कि अन्य महाद्वीपों में भी फैल रही है। विश्व मानवता की स्वतंत्रता, समानता और गरिमा को समर्पित संयुक्त राष्ट्र संघ, वैश्वीकरण, सूचना प्रौद्योगिकी के कारण आई सूचना क्रांति ने हिंदी के वैश्विक परिदृश्य का विस्तार कर इसे नयी पहचान दी है।

बीज शब्द: *वैश्विक, गिरमिटिया, प्रवासी, वेबसाइट, ब्लॉग, डिजिटल मीडिया*

विश्व भाषा के रूप में हिन्दी के विकास में भारतीय मूल के प्रवासियों की अहम् भूमिका है। गिरमिटिया मजदूर के रूप में ये मॉरीशस, गयाना, सूरीनाम, त्रिनिदाद, फिजी और दक्षिण अफ्रीका गए। इन लोगों ने भारतीय अस्मिता की पहचान बनाए रखने के लिए अपनी सभ्यता संस्कृति का औपनिवेशिक दासता के विरुद्ध हथियार के रूप में कारगर प्रयोग किया। भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के वंशज आज भी भाषा के द्वारा अपनी परंपरा को सहेजे हुए हैं। फिजी में भारतीय मूल के लोगों की संख्या 48 % सूरीनाम में 39 % त्रिनिदाद-टोबैगो में 42 % है। भारतवंशियों के इन पूर्व औपनिवेशिक देशों में हिन्दी समझी और बोली जाती है। कुछ देशों में सरकारी कामकाज भी हिन्दी में होता है और बाजार में भी यह प्रचलित है। यह संपूर्ण दक्षिण एशिया की लगभग संपर्क भाषा बन चुकी है। विश्व के अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, स्वीडन, हंगरी, इटली, पोलैंड, रूस, चीन, कनाडा, श्रीलंका, थाइलैंड, इंडोनेशिया, मलेशिया, म्यांमार, वियतनाम, सिंगापुर, फिलीपींस, बुरनेई, कंबोडिया और लाओस सहित साठ से अधिक देशों और छह सौ से अधिक विद्यालय-विश्वविद्यालयों में इसका पठन-पाठन किया जाता है।

विश्व के सभी महाद्वीपों और लगभग सभी देशों में हिन्दी का प्रयोग व्यापक रूप से होने लगा है। 42.2 करोड़ लोगों की आम भाषा हिन्दी है। वैसे विश्व के करीब 180 देशों में एक अरब लोग हिन्दी बोलते समझते हैं। डा. जयन्ती नौटियाल द्वारा किए गए शोध अध्ययन 2015 (अनुमानित) के अनुसार हिन्दी विश्व के भाषा-भाषियों की दृष्टि से प्रथम एवं सबसे लोकप्रिय भाषा है। हिन्दी जानने वालों की संख्या 1300 मिलियन हो गई है। यानी मंदारिन (चीन) से 200 मिलियन अधिक, अंग्रेजी की संख्या 1000 मिलियन है। जनमानस में भाषा की पैठ और प्रतिष्ठा पहली कसौटी है जो किसी भाषा की वैश्विक स्थिति को दर्शाती हैं।

भाषा में युगानुकूल परिवर्तन यानी समाहार क्षमता, उसकी वैश्विक स्थिति की दूसरी कसौटी है। अपनी समाहार क्षमता से हिन्दी आज जीवित ही नहीं है अपितु विश्वभाषा के रूप में विकसित हो रही है। हिन्दी में समूचे हिन्दी प्रदेश पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण की भारतीय भाषाओं के ही नहीं वरन् अंग्रेज़ी और अन्य भाषाओं के सार्थक शब्दों की उपस्थिति भी देखी जा सकती है।विश्व में सौ से अधिक विदेशी मूल के लेखक हिन्दी में सर्जनात्मक लेखन में रत हैं। अंग्रेज़ी के शब्दकोशों में हिन्दी और भारतीय मूल के हजारों शब्दों को ज्यों का त्यों ले लिया गया है जैसे सत्य, अहिंसा, आत्मा, देव, असुर, भक्ति, तंत्र, योग, माया, वेद, स्वास्तिक, स्वराज्य, सत्याग्रह, स्वदेशी, हड़ताल, जिंदाबाद आदि। आक्सफोर्ड शब्द कोश के दसवें संस्करण में हिन्दी और भारतीय मूल के पाँच सौ शब्द सम्मिलित किए गए हैं। इससे पता चलता है कि विश्व में हिन्दी ही नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति और मनीषा का विस्तार हो रहा है।

जनसंचार माध्यमों में हिन्दी बहुआयामी भूमिका निभा रही है। संचार माध्यमों में किसी भाषा का प्रयोग वैश्विक स्थिति का तीसरी महत्वपूर्ण कसौटी है। 2015-16 में देश में प्रकाशित होने वाली पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 1 लाख 10 हजार 8 सौ 51 है ।जिसमें सर्वाधिक संख्या हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं की है। समाचार-पत्र पंजीयन की भारतीय प्रेस 2015-16 की रिपोर्ट के अनुसार देश में 14 हजार 316 हिंदी पत्र पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं। जिसमें 4118 दैनिक, 5974 साप्ताहिक, 1505 पाक्षिक और 2475 मासिक पत्रिकाएं हैं। प्रसार संख्या की दृष्टि से भी हिंदी अव्वल है हिंदी पत्र पत्रिकाओं की प्रसार संख्या 31 करोड, 44 लाख 55 हजार है। विदेशों में भी अनेक पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। अमेरिका से विश्व

विवेक, विश्वासौरभ, नवयुग इग्लैंड से पुरवाई, प्रवासिनीं, अमरदीप, प्रवासी टाइम्स, जापान से सर्वोदय, जापान भारती, ज्वालामुखी, नार्वे में शांतिदूत, अप्रवासी टाइम्स, मारीशस में स्वदेश, रणभेरी, अनुराग, इंद्रधनुष, आर्यवीर, हिन्दुस्तानी, बसंत, नेपाल से नेपाली, साहित्यलोक रूस में भारत भूमि, भारत दर्पण चीन से सचित्र चीन, फीजी से फीजी टाइम्स, संस्कृति, लहर गयाना से ज्ञानदा, त्रिनिदाद से ज्योति, बर्मा से ब्रह्मभूमि, न्यूजीलैंड से भारत दर्शन, कनाडा से सरस्वती पत्र, इंग्लैंड से हिन्दी इलैक्ट्रानिक लिटरेरी मैगजीन, सउदी अरब अमीरात से अभिव्यक्ति, अनुभूति, झेलम से इ-विश्वा प्रकाशित हो रही हैं। हिन्दी के समाचार पत्रों की संख्या और उनकी प्रसार संख्या में गुणात्मक परिवर्तन आया है।

हिन्दी को देश-विदेश में आगे बढ़ाने में इलैक्ट्रानिक मीडिया भी पीछे नहीं है। प्रसार भारती का 80 प्रतिशत काम हिन्दी में होता है। आजादी के बाद से ही रेडियो की विदेश प्रसारण सेवा हिन्दी के कार्यक्रम सम्मिलित करके हिन्दी के विकास का कार्य कर रहा है। वर्तमान में आकाशवाणी का विदेश सेवा प्रभाग, दक्षेस, आसियान, खाड़ी देशों, पश्चिमी यूरोप, अफ्रीका में प्रतिदिन प्रातःकाल से रात्रि तक हिन्दी कार्यक्रम प्रसारित कर रहा है। रेडियो बी.बी.सी., वायस आफ अमेरिका, वायस आफ एशिया, दोएचे बेले (जर्मनी) रेडियो पेइचिंग, फिजी सूरीनाम, त्रिनिदाद-टोबैगो पर हिन्दी में रेडियो कार्यक्रम प्रसारित किए जाते है। मारीशस ब्राडकास्टिंग कम्पनी सारे दिन हिन्दी के कार्यक्रम देती है।

भारत के टेलीविजन कार्यक्रमों के पूरे विश्व में दर्शक हैं। रामायण, महाभारत, भारत एक खोज, बुनियाद, हम लोग जैसे धारावाहिकों ने पूरे विश्व में धूम मचा दी थी। कौन बनेगा करोड़पति जैसे कार्यक्रम बहुत पसंद किए जाते हैं। त्रिनिदाद के स्थानीय टी.वी. मस्ताना बहार, इंडियन वैरायटी आदि कार्यक्रमों से हिन्दी को आगे बढ़ा रहा है। हिन्दी के वैश्विक रूप को गढ़ने में जनसंचार माध्यमों ने पर्याप्त योगदान दिया है। बाजार की प्रतिस्पर्धा के कारण अंग्रेजी चैनलों का हिन्दी में रूपांतरण हो रहा है।

विश्व में हिन्दी सिनेमा यानी बालीवुड का निरंतर विस्तार हो रहा है। दुनिया की सभी प्रमुख हिन्दी फिल्मों का अनुवाद किया जा रहा है। राजा हरिश्चन्द्र पहली भारतीय फिल्म थी जो 1914 में लंदन में दिखाई गई। 1925 में भारत और जर्मनी के साझा प्रयास से बनी 'लाइट आफ एशिया' जैसी फिल्म थी जिससे भारतीय फिल्मोद्योग को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली। 1951 में राजकपूर की फिल्म 'आवारा' वैश्विक स्तर पर कामयाब होने वाली सबसे पहली फिल्म है। भारतीय फिल्मों, फिल्मी गानों और अभिनेताओं के प्रति यह आकर्षण बढ़ता ही जा रहा है। हम आपके हैं कौन, बागबान, सत्या, कभी खुशी कभी गम, परदेस, दिलवाले दुल्हनियां ले जाएंगे, लगान, स्वदेश, तारे-ज़मी पर, दंगल, पेडमैन, बाहुबली ऐसी फिल्में हैं जो दुनिया में अपनी अलग पहचान बनाने में सफल रहीं।

विश्व में बनने वाली हर चौथी फिल्म हिन्दी होती हैं। भारत में निर्मित होने वाली 60 प्रतिशत फिल्में हिन्दी भाषा में बनती हैं। हिन्दी में अहिन्दी भाषी कलाकार, गीतकार-संगीतकार हिन्दी सिनेमा के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर रहे है। विदेशी कलाकार हिन्दी फिल्मों की वजह से लोकप्रिय हो गए हैं जैस मेहंदी हसन व गुलाम अली (पाकिस्तानी गजल गायक) रूना लैला (बांग्लादेश) और पाकिस्तानी अदाकारा जेबा को हिन्दी से लोकप्रियता मिली।

भारतीय महाद्वीप, खाड़ी देशों विशेषकर संयुक्त अरब में हिन्दी और हिन्दी फिल्में दोनों ही समान रूप से लोकप्रिय हैं। हिन्दी फिल्मों की पायरेसी का सबसे बड़ा अड्डा दुबई ही हैं। भारतीय फिल्मों का अनुकरण पूरे दक्षिणी एशिया, ग्रेटर मध्यपूर्व, दक्षिणपूर्व एशिया और पूर्व सोवियत संघ में भी होता है। भारतीय प्रवासियों की बढ़ती संख्या के कारण अमेरिका और इंग्लैंड में भी भारतीय फिल्मों के लिए महत्वपूर्ण बाजार बन गए हैं। माध्यम के रूप में सिनेमा ने देश-विदेश में अभूतपूर्व लोकप्रियता हासिल की है। भारतीय सिनेमा ने 90 से ज्यादा देशों में बाजार पाया हैं, जहाँ भारतीय फिल्में प्रदर्शित होती हैं। दंगल दुनिया भर में 300 मिलियन डालर से अधिक की कमाई करके अंतरराष्ट्रीय ब्लाक बस्टर बन गई। हिन्दी भाषा फिल्में सबसे बड़ा यानी 43 प्रतिशत बाक्स आफिस राजस्व का योगदान करती हैं। प्रवासी भारतीयों के लिए फिल्में डी.वी.डी. या व्यवसायिक रूप से संभव जगहों में स्क्रीनिंग के माध्यम से प्रदर्शित होती हैं। विदेशी बाजार से भारतीय फिल्मों को 12 प्रतिशत आय होती है।

हालीवुड की फिल्मों में हिन्दी शब्दों का प्रयोग हो रहा हैं। आस्कर से सम्मानित फिल्म 'अवतार' हिन्दी का ही शब्द है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर धूम मचाने वाली फिल्म (स्लमडाग मिलिनेयर-2008) का 'जय हो' गाना इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। हिन्दी सिनेमा ने हिन्दी को विश्व मंच पर स्थापित किया है। प्रभाष जोशी ने ठीक है"सिनेमा ने हिन्दी का वैश्वीकरण नहीं किया वरन् विश्व के हिन्दीकरण का प्रयास किया है।" सूचना प्रौद्योगिकी ने हिन्दी के प्रति विश्व के रूझान में सकारात्मक बदलाव किया है। इंटरनेट और मोबाइल के प्रयोगकर्ताओं की तेजी से बढ़ती संख्या,।स्मार्ट फोन में हिन्दी की मौजूदगी ने इसके प्रयोग को द्रुत गति दी है।फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, यूट्यूब वाट्सएप, ब्लागस और वेब सीरीज ने हिन्दी भाषा का विस्तार किया है। आज हिन्दी की लगभग 1 हजार वेबसाइट सक्रिय है। भारत में हर पांचवा प्रयोगकर्ता हिन्दी का उपयोग करता है।

वैश्वीकरण के कारण हिन्दी आज विकास, बाजार और मीडिया की भाषा बन रही है क्योंकि उपभोक्ता शक्ति का एक बहुत बड़ा भाग हिन्दी क्षेत्र में है। इसी कारण विज्ञापन का कार्य हिन्दी में होता है।बाजार की व्यापक उपलब्धता यानी रोजगार के लिए उपयोगी होना वैश्विक

भाषा की चौथी कसौटी है जिस पर हिन्दी की स्थिति लगातार सुदृढ़ हो रही है। हिन्दी भाषा के क्षेत्र में रोजगार के अवसर भी बढ़ते जा रहे हैं। केन्द्र सरकार के विभिन्न विभाग, हिन्दी भाषी राज्यों के विभिन्न विभागों में हिन्दी अधिकारी, हिन्दी अनुवादक, हिन्दी सहायक, प्रबंधक (आधिकारिक भाषा) जैसे कई पदों पर नियुक्ति होती है। टेलीविजन और रेडियो चै.नलों, समाचार-पत्रों के हिन्दी संस्करणों में विकास के कारण इन क्षेत्रों में रोजगार के अवसर कई गुना बढ़ गए हैं। जनसंचार माध्यमों में संपादक, उपसंपादक, संवाददाता, प्रूफ रीडर, रेडियो जाकी, एंकर, स्क्रिप्ट लेखक, संवाद लेखक, गीतकार, हिन्दी वेब साहित्य के लिए भी कंटेट लेखक की भरपूर माँग हैं। इसके साथ ही अंग्रेज़ी और अन्य विदेशी भाषाओं के लेखों, हिन्दी-अंग्रेज़ी फिल्मों, विज्ञापनों के अनुवाद के अवसर है।

पुस्तक प्रकाशन के क्षेत्र में भी हिन्दी अपनी पैठ बना रही है। वैश्विक स्तर पर प्रकाशित की जाने वाली किताबों के प्रकाशकों, प्रमुख बहुराष्ट्रीय प्रकाशन संस्थानों ने न सिर्फ हिन्दी भाषा की पुस्तकों का प्रकाशन शुरू किया है बल्कि पुरानी और लोकप्रिय पुस्तकों का बड़े पैमाने पर हिन्दी में अनूदित कराके प्रकाशित भी किया है। भाषा अध्यापन के क्षेत्र में देश विदेश में हिंदी अध्यापन और दूतावासों में जीविका के अवसर उपलब्ध हैं।

भाषा की उपयोगिता ही उसका विकास और स्थान तय करती है। दैनंदिन राजनैतिक और आर्थिक शक्ति का केन्द्र बन रही हिन्दी निश्चित रूप से विश्व भाषा की कसौटी पर खरी उतर रही है। इसमें ''समकालीन चुनौतियों का सामना करने ओर वांछित रेस्पांस' देने की सामर्थ्य और आधुनिक संवेदनाओं एवं विमर्शों को अभिव्यक्त करने की शक्ति हैं।'' इस प्रकार हिन्दी विराट जनसमुदाय की भाषा है जो सृजनात्मकता के साथ लगातार वैश्विक पहचान बना रही है।

संदर्भ

1. हिन्दी: राजभाषा, विश्वभाषा, जनभाषा - संपादक वीरेन्द्र परमार, पहला संस्करण, 2013, दरियागंज, नई दिल्ली-110002.
2. हिन्दी वेब साहित्य - डा. सुनील कुमर लवर्ट, पहला संस्करण 2013, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली-110002.
3. इक्कसवीं सदी औपनिवेशिक मानसिकता और भाषा - संपादक हर्षबाला शर्मा, अंतिका प्रकाशन, शालीमार गार्डन, गाजियाबाद।
4. संवेद: जनवरी 2015.
5. समकालीन भारतीय साहित्य - वर्ष 11 , अंक 45 , जुलाई-सितंबर 1991.
6. मीडिया - अंक 3, जुलाई-सितंबर 2007.
7. समसामयिक सृजन - अक्टूबर-मार्च 2012-13 (संयुक्तांक)।
8. https://www.rachnakar.org.
9. https://www.prabhasakshi.com